समकालीन विश्व में मार्क्सवाद

समकालीन विश्व में मार्क्सवाद' विषय पर नीलम राजशेखर रेड्डी समाज विज्ञान शोध केंद्र व चंद्र राजेश्वर राव शोध संस्था, द्वारा हैदराबाद में चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिसंबर, 2009 में किया गया, जिसमें मार्क्सवाद का दर्शन विचार-विमर्श का मुख्य केंद्र बिंदु रहा। इस कार्यशाला में हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, झारखंड, तमिलनाडू, आंध्र प्रदेश आदि राज्यों से लगभग 35 बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। शोध केंद्र के निदेशक सी.राघवाचारी ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुये प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा विषय का परिचय बताते हुए बताया कि 'इक्कीसवीं सदी में समाजवाद' विषय पर भी गत वर्ष कार्यशाला आयोजित की गई थी जिसमें निर्णय लिया गया था कि इस विषय पर गहराई से विचार-विमर्श करने के लिए अगले वर्ष कार्यशाला का आयोजन किया जाए।

अनिल राजिमवाले ने 'समकालीन विश्व में मार्क्सवाद' पर परिचर्चा के लिए अपना मुख्य आधार पत्र प्रस्तुत किया जिसमें समकालीन विश्व में मार्क्सवाद की दार्शनिक समस्याओं व सभी क्षेत्रों में तेजी से हो रहे परिवर्तनों का विवेचन किया गया। इस पत्र द्वारा विभिन्न विषयों जैसे समाजवाद की सैद्धांतिक समस्यायें, समाजवाद का दर्शन, द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त काल में विश्व साम्यवादी आंदोलन द्वारा नई स्थितियों का मूल्यांकन, समाजवाद व ऐतिहासिक भौतिकवाद के नियम, प्रजातंत्र व समाजवाद, श्रमिक वर्ग व वेतनभोगी वर्ग की धारणा, आधुनिक समाज की बदलती संरचना, सूचना व संचार क्रांति तथा चेतना का निर्माण, क्रिटिकल सिद्धांत,आधुनिक राज्य का स्वरूप, मार्क्सवाद व उत्तर आधुनिकतावाद तथा कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक समस्याओं की विवेचना की गई। राजिमवाले ने इस बात पर बल दिया कि तेज़ी से बदलते विश्व से सबक लेकर उनको मार्क्सवादी सिद्धांत व दर्शन में शामिल करते हुए मार्क्सवाद को विकसित करना होगा। इसके साथ-साथ साम्राज्यवाद के वैचारिक आक्रमण के विरुद्ध भी संघर्ष करना होगा। इस आधार पत्र द्वारा उठाये गये मुद्दों पर प्रतिभागियों ने बड़े जोश से बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा सिद्धांत व दर्शन की समस्याओं के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया।

मुख्य आधार के अतिरिक्त 19 अन्य अन्य पत्र-बदलता विश्व व मार्क्सवाद, वैज्ञानिक तकनीकी क्रांति, क्वैंटम विश्व, इलेक्ट्रानिक्स व दर्शन में संकट, समाजवाद के लिए संघर्ष को मजबूत करना, इक्कीसवीं सदी में समाजवाद में प्रजातंत्र, वामपंथी आंदोलन के सामने मार्क्सवादी समस्यायें, श्रम पर मार्क्सवादी सिद्धांतों की वैधता, उत्तर आधुनिक समाज में वर्ग व वर्ग संघर्ष, मार्क्सवादी दर्शन का विकास एवं विकृतियां, संसदीय संस्थाओं के व्यवहार पर मार्क्स व एंगेल्स, नये विश्व के पथ पर, पर्यावरण व विकास में द्वंद्व, पर्यावरण संकट व भविष्य का विकास, भविष्य के विकास का दृष्टिकोण, रासायनिक तत्व व द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के नियम, प्रजातंत्र व साम्यवादी दल, पहचान की राजनीति व मार्क्सवाद, मार्क्सवादी सिद्धांत का विकास,पर्यावरण, विज्ञान व विकास के प्रतिमान आदि पर प्रस्तुत किये गये। पत्र प्रस्तुत करने वालों में प्रमुख थे - अनिल राजिमवाले,एम. विजय कुमार, प्रो. एस जी कुलकर्णी, सी आर बख्शी, डॉ.रामेश्वर दास, डॉ.राकेश शर्मा, डॉ. मुखदेव शर्मा,डॉ.पी सी झा, देव पेरेबियन, डॉ. जे के गुप्ता, शैलेन्द्र, टीकाराम शर्मा, प्रो. युगल रायलू, डॉ. आर जे स्वामी, डा. ईश्वर सिंह दोस्त व डॉ. बी के कांगो।

इस बात पर बल दिया गया कि हम शीघ्र बदलते विश्व में रह रहे हैं और इन परिवर्तनों में वैज्ञानिक तकनीकी क्रांति तथा सूचना व संचार क्रांति की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसके परिणामस्वरूप समाज, बाजार, उत्पादक शक्तियां एवं चेतना में बहुत तेजी से बदलाव हो रहे हैं। वे केवल सैद्धांतिक प्रतिपादन नहीं हैं, बल्कि इनका व्यवहारिक आशय भी है। उदाहरण के लिए श्रमिक व वेतनभोगी वर्ग तथा समाज की संरचना में परिवर्तन हुए हैं तो इसके साथ ही चेतना निर्माण में इलैक्ट्रानिक सूचना तंत्र एवं भूमिका में भी वृद्धि हुई है। इसलिए क्रांतिकारी एवं प्रजातांत्रिक आंदोलनों में जनता को साथ लेने के लिए नये तरीके ढूंढने होंगे। समाज, उपकरणों एवं मानव में हो रहे परिवर्तन तथा इसके साथ ही प्रकृति की खोज के नये तरीकों के कारण नये तथ्य उजागर हो रहे हैं और नये दार्शनिक प्रश्न उठ रहे हैं। मार्क्सवाद अपरिवर्तनशील हठधर्मी सिद्धांत व प्रतिपादन नहीं है। यह कोई धर्म नहीं है, बल्कि विज्ञान है। इसलिए मार्क्सवादी सिद्धांत व दर्शन को नयी वैज्ञानिक खोज, तकनीकी परिवर्तन व सामाजिक-आर्थिक व राजनीतिक घटनाओं के संदर्भ में अपने आप को विकसित करना होगा। केवल तभी मार्क्सवादी दर्शन विश्व की उचित व्याख्या कर पायेगा तथा अपने आप को और अच्छी प्रकार रूपान्तरित कर पायेगा। मार्क्सवाद एक अग्रगामी विचारधारा है। प्रगतिशील विचारकों में मार्क्स, एंगेल्स व लेनिन प्रमुख थे। वे औद्योगिक काल के विभिन्न प्रारूपों व पक्षों को अच्छी तरह समझते थे। इसी कारण मार्क्सवाद तथा मार्क्सवादी दर्शन ने अत्यधिक प्रभावशाली भूमिका निभाई है और साम्राज्यवाद के सभी आक्रमणों का सफलतापूर्वक मुकाबला किया है। मार्क्स द्वारा आर्थिक संकट की भविष्यवाणी सही साबित हुई है। लोग पूंजीवाद का विकल्प ढूंढने के लिए लगातार संघर्ष कर रहे हैं।

मार्क्सवाद स्थिर और अपरिवर्तनशील नहीं रह सकता। समकालीन विश्व में उभरते नये तथ्यों की समालोचना के साथ उन्हें मार्क्सवाद को अपने आप में विलय व विकसित करना होगा। इसे इलेक्ट्रौनिक युग की घटनाओं का अध्ययन करके उन्हें अपने आप में आत्मसात करना होगा। आधुनिक प्रकृति विज्ञान, समाज विज्ञान, इलेक्ट्रौनिक्स, उत्तर औद्योगिक समाज, उत्तर आधुनिकतावाद आदि में हुये विकास के फलस्वरूप पदार्थ व विचार, कर्त्ता-कर्म संबंध, आकास्मिक व वास्तविक, उत्पादन व सूचना के साधन तथा प्रणाली आदि संबंधित नई दार्शनिक समस्यायें उठी हैं। इन समस्याओं का हल मार्क्सवाद ने निकालना है। मार्क्सवाद को नई क्रिटिकल थ्योरी विकसित करनी होगी। इलेक्ट्रौनिक्स युग में द्वंद्वात्मक पद्धति अधिक प्रासंगिक हो गई है। इस पद्धति को वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र में हो रहे शीघ्र परिवर्तनों के संदर्भ में और तीखा करना होगा तथा इस पर महारत हासिल करनी होगी।

पर्यावरण संकट चिंता का मुद्दा है। पर्यावरण इस सीमा तक पतन की ओर चला गया है कि जलवायु भी बिगड़ रहा है और विश्वस्तरीय संकट खड़ा करने की आशंका है। इससे विकास की नई योजना का प्रश्न खड़ा हो गया है तथा पर्यावरण और विकास के बीच द्वंद्व और भी तीखा हो गया है। कुछ अन्य व्यवहारिक मुद्दे भी उठाये गये। सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में पहचान की राजनीति, समाज के नये वर्ग की समस्याओं का हल, साम्राज्यवादी, सांप्रदायिक व नव-उदारवादी आक्रमण तथा मार्क्सवाद की सुरक्षा, उत्तर आधुनिकतावाद व अन्य पद्धतियों से संघर्ष, अन्य चिंतन धाराओं की विचारधारा में पोजिटिव से सबक लेना तथा उनको आत्मसात करने की समस्या, वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति तथा सूचना व संचार क्रांति का अध्ययन आदि मुद्दे भी विचार-विमर्श के दौरान उठे। इस सफल कार्यशाला का कॉर्डिनेशन अनिल राजिमवाले तथा एम. विजय कुमार ने किया। इसके समापन समारोह को संबोधित करते हुए भारतीय साम्यवादी दल के सांसद एस. सुधाकर रेड्डी ने कहा कि भारत में जाति विद्यमान है, इसलिए जाति एवं ऐसे अन्य मुद्दों का अध्ययन करना चाहिए। धर्म विद्यमान है जिसका लोगों पर गहरा प्रभाव है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि साम्यवादी होने के लिए नास्तिक होना जरूरी नहीं है। रेड्डी ने कहा कि विचार-विमर्श, बहस केवल साम्यवादियों अथवा भारतीय साम्यवादी दल तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि मार्क्सवादियों के अन्य वर्गों, गैर मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों व शिक्षित वर्ग को भी शामिल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्यशाला प्रत्येक वर्ष आयोजित की जायेगी जिसका आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान होगा।

-प्रो. जे.के.गुप्ता

अमेरिका : विश्व शांति के लिए बड़ा खतरा

क्या अमेरिका ने अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान को अपना गुलाम बना लिया है? परिस्थितियों को देखते हुए तो ऐसा ही लगता है। अफ़गानिस्तान के बाद अमेरिका ने इराक को सबसे पहले अपना गुलाम बनाने की कोशिश की और उस पर हमला बोल दिया। सद्दाम को फांसी दे दी, उस अपराध के लिए जो उसने कभी किये ही नहीं थे, यानी जैविक और रासायनिक हथियारों को रखना। यहां तक कि इस बात को जानने के लिए कि इराक के पास जैविक और रासायनिक हथियार हैं या नहीं, अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ पर दबाव डाल कर उक्त हथियारों की खोज करने के लिए इंस्पेक्टरों को वहां भेजा। उन इंस्पेक्टरों ने इराक का चप्पा-चप्पा छान मारा, पर कहीं भी उन्हें उक्त हथियार नहीं मिल सके। सद्दाम ने भी बार-बार कहा कि उसके पास वे हथियार नहीं हैं जिसके होने का आरोप अमेरिका लगा रहा है।

जब अमेरिका को यह महसूस हुआ कि इस आधार पर कार्रवाई करना संभव नहीं है तो उसने जंगली भेड़िये की भांति सीधा इराक पर हमला कर दिया और संयुक्त राष्ट्र संघ की भी कोई परवाह नहीं की। परवाह क्यों करता?

संयुक्त राष्ट्र संघ वही कहेगा और करेगा जो अमेरिका के समर्थन में हो। यहां भूलना नहीं चाहिए कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जब राष्ट्र संघ का गठन किया गया था ताकि महा विनाशकारी युद्धों पर रोक लगाई जा सके और देश आपस में लड़ने की बजाये, इस संघ के माध्यम से आपसी मामले सुलझायें। इस पर सब राजी हो गये, लेकिन राष्ट्र संघ कुछ नहीं कर पाया और दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो गया। इसके बाद राष्ट्र संघ विघटित हो गया। इस युद्ध के दौरान और बाद में उपनिवेशों को बनाये रख पाना साम्राज्यवादियों के लिए संभव नहीं रह गया था और इसकी कोई खास जरूरत भी उन्हें नहीं रह गई थी, क्योंकि बाज़ार का चरित्र ही बदल चुका था। पूरी दुनिया में खुली होड़ का जमाना आ चुका था, फ़िर भी भेड़ियों को भेड़ की खाल तो पहननी ही थी। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन किया गया। इस संघ के एक अंग सुरक्षा परिषद् के माध्यम से अपने कामों के लिए हरी झंडी दिखलवाना जरूरी समझा गया।

पर सुरक्षा परिषद् में चंद साम्राज्यवादी और ताकतवर देशों के अलावा और किसी को शामिल नहीं किया गया। इस तरह संयुक्त राष्ट्र संघ भी साम्राज्यवादी देशों की सेवा में लग गया और अभी भी लगा हुआ है।

यह साम्राज्यवाद का मुखौटा है, पर अपनी उतावली में साम्राज्यवादी देश स्वयं इस मुखौटे को उतार कर रख लेते हैं और जरूरत पड़ने पर फ़िर पहन भी लेते हैं। यही कारण है कि अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र की जरा भी परवाह किये बिना अपनी फौजों को इराक भेज दिया। सद्दाम हुसैन को आनन-फानन में फांसी देने के बाद अमेरिका ने इराक पर कब्ज़ा कर लिया। हालांकि जार्ज बुश बराबर यह कहते रहे कि अमेरिका से फौजों को जल्दी से जल्दी वापस बुला लिया जायेगा, पर वास्तव में वहां और भी फौज बहाल कर दी गई। इराक में अमेरिकी फौज के लगाये जाने का विरोध वहां के जनतंत्रवादी लोग़ करते रहे, पर बुश पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। इसके बाद ओबामा राष्ट्रपति बने। ओबामा के बारे में कहा जा रहा था कि ये इराक से फौज की वापसी करवायेंगे और इराक को सुस्थिरता प्रदान करेंगे। पर ओबामा बुश से भी बीस निकले। इन्होंने फौजों की वापसी क्या, और भी फौज भेजना शुरू कर दिया। इसका मतलब क्या है? क्या यह इराक को गुलाम बनाने वाली बात नहीं है?

आज इराक में गृहयुद्ध अपने चरम पर पहुंचता दिखाई पड़ रहा है। लोग़ ग़रीबी-कंगाली से ग्रस्त हैं। और इधर अमेरिकी तेल कंपनियां तेल पीने के महा अभियान में लगी हुई हैं। इस हालत में यह प्रतीत होता है कि अमेरिका इराक पर तब तक काबिज़ रहेगा, जब तक कि वहां की जनता संगठित होकर अमेरिका को खदेड़ न भगाये। अमेरिकी शासक इस्लामी आतंकवाद को दुनिया की शांति के लिये सबसे बड़ा खतरा मानते हैं। पर असली बात यह है कि आतंकवादियों के पनपने, फूलने और फलने में अमेरिका की आधारभूत भूमिका रही है।

आतंकवाद को स्वयं अमेरिका ने पैदा किया था और अब भी उससे ढंग से निपटने की बजाय वह 'आतंकवाद, आतंकवाद' का शोर मचा कर दुनिया भर में खौफ़ पैदा करने की कोशिश कर रहा है। वास्तविकता यह है कि आतंकवाद अगर मिट जाता है तो भी अमेरिकी शासकों को अपनी खाल बचाने के लिए फिर से किसी न किसी तरह का 'आतंकवाद' पैदा करना पड़ेगा। दुनिया भर में अमेरिका का शक्ति संतुलन बना रहे, इसके लिए तथाकथित 'एक ध्रुवीय' दुनिया के दादा को आतंक का सहारा लेना ही पड़ेगा, नहीं तो वह अपने दुश्मन के रूप में किसे खड़ा करेगा? दूसरी बात जो सबसे महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि जिस देश की सैन्य ताकत का डंका पूरी दुनिया में बजता है, वह एक लादेन को नहीं पकड़ पाया? इससे पता चलता है कि दुनिया का दादा बने फ़िरते अमेरिका की अपनी हालत क्या है? इसीलिए यह कहना अनुचित नहीं लगता कि एक लादेन यदि मर भी गया तो भी भूसा भरा दूसरा लादेन उसे दुनिया को दिखाने और आतंकित करने के लिए रखेगा।

इससे स्पष्ट है कि अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी है और विश्व शांति के लिए गंभीर खतरा है। विडंबना यह भी है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा को शांति का नोबेल पुरस्कार मिला है। जहां तक अफ़गानिस्तान का सवाल है, उसकी हालत और भी बुरी है। सोवियत साम्राज्यवाद के हाथों लुटते-पिटते और इसके बाद कठमुल्लावादियों के शासन में डरते-सहमते वहां की जनता किसी तरह जीने को मजबूर है। वहां की जनता के लिए फौजों को झेलना एक दर्दनाक हादसे की तरह है। पहले रूसी फौज, फ़िर तालिबान की अंधी ताकत और सत्ता पर कब्ज़े के लिए युद्ध सरदारों द्वारा अराजकता की स्थिति पैदा करना, फ़िर अमेरिकी फौज। जनता की भारी दुर्दशा। चुनाव का नाटक। अब अमेरिकी एजेंट हामिद करजई सत्ता पर काबिज़। पर उनकी सत्ता भी राजमहल तक ही सीमित। कई बार तालिबान प्रमुख मुल्ला उमर को वार्ता के लिये बुलाया, पर उसने आने से इनकार कर दिया। हामिद करजई किसी भी मुद्दे पर अमेरिकी शासकों से निर्देश लिये बिना काम नहीं करते। फ़िर मुल्ला उमर को वार्ता के लिए आमंत्रित किया जाना। इससे क्या संकेत मिलते हैं? यही कि हालात अमेरिका के नियंत्रण से बाहर है और इसीलिए उसने पागलपन में अफ़गानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर कबीलाई इलाके में मानवरहित ड्रोन विमानों से हमला बोल दिया है। बावजूद इसके पाकिस्तानी शासक अमेरिका से यह नहीं कह सकते कि उनकी सीमा में हमला क्यों? पाकिस्तान की संप्रभुता को अमेरिका लगातार रौंद रहा है, पर वहां के शासकों में इतनी हिम्मत ही नहीं कि वे इस पर सवाल उठा सकें। सवाल इसलिए नहीं उठा सकते, क्योंकि अमेरिका के समर्थन से ही सत्ता पर काबिज़ हैं और आतंकवाद पर रोक का नाटक करने के नाम पर खूब माल उड़ा रहे हैं। इस हाल में तालिबान और अनेकों आतंकवादी संगठन अपनी शक्ति के विस्तार में लगे हुए हैं। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तान अब संप्रभु राष्ट्र नहीं रहा। उसने अपनी संप्रभुता को अमेरिका के हाथों गिरवी रख दिया है।

कुल मिला कर यह कहा जा सकता है कि अमेरिका अपनी दादागिरी दिखाने और लूट मचाने के लिए पूरी दुनिया की शांति को खतरे में डाल दिया है। लेकिन अब आग चाहे जहां भी लगे, उसकी आंच दूर-दूर तक जायेगी।

- मनोज कुमार झा